काव्य लक्षण

तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृति पुनः क्वापि ।

अर्थात् दोषों से रहित, गुण-युक्त और कहीं अलंकार रहित भी शब्द और अर्थ काव्य कहलाता है ।

१. अदोषौ- अदोषौ का तात्पर्य है दोष से रहित । काव्यशास्त्र में श्रुतिकटु, च्युतसंस्कृति आदि पद दोष, वाक्यगत दोष तथा रसदोषों का विवेचन किया जाता है । काव्य को इन दोषों से रहित होना चाहिये । काव्य का लक्ष्य है रसास्वाद कराना अतः रसास्वाद मे बाधक तत्वों से मुक्त होना आवश्यक है ।

२. सगुणौ- जिन शब्दार्थ युगल से काव्य का निर्माण होता है उनका गुणयुक्त होना आवश्यक है । गुण से तात्पर्य प्रसाद गुण(जब काव्य से सहृदय पाठक/दर्शक को निर्मलता की अनुभूति हो), माधुर्य गुण(जब काव्य से सहृदय पाठक/दर्शक को मधुरता की अनुभूति हो) तथा ओज गुण(जब काव्य से सहृदय पाठक/दर्शक को वीरता की अनुभूति हो) । इन गुणों को रस का स्थायी धर्म स्वीकार किया जाता है । गुण के अभाव में काव्य में रसोत्पत्ति नहीं हो सकती है । आचार्य आनन्दवर्धन के अनुसार प्रसादादि गुण रस का धर्म उसी प्रकार है जैसे शूरता, वीरता आदि व्यक्ति के गुण उसकी आत्मा में होते हैं ।

३. अनलंकृति पुनः क्वापि- सभी काव्यों को अलंकारयुक्त होना चाहिये परन्तु यदि कहीं पर स्पष्ट अलंकार न हो तो काव्य की कोई हानि नही होती है । अधिकांश आचार्य अलंकार को काव्य का शोभावर्धक मानते हैं तथा गुण को शोभादायक ।

अतः दोषरहित, गुणयुक्त तथा कहीं-कहीं अलंकार से रहित शब्दार्थ को काव्य कहते हैं।

प्रमुख आचार्यों द्वारा दिये गये काव्यलक्षण:-

१. शब्दार्थौ सहितौ काव्यम् ।(भामह)

२. वाक्यं रसात्मकं काव्यं ।(विश्वनाथ)

३. रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम् ।(जगन्नाथ)

४. शब्दार्थशरीरं तावत् काव्यम् । (आनन्दवर्धन)

(विशेष- कक्षा में विस्तृत रूप से पढ़ाया गया है ।)